ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
© IJMRAST | Vol. 2 | Issue 6 | June 2024
Available online at: https://ijmrast.com
DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i6.62

स्वामी विवेकानंद का शिक्षा दर्शन

डॉ निशा द्विवेदी

असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, संबद्ध महाविद्यालय, डॉ राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या

Email: nishadwivedi224164@gmail.com

सारांश :

स्वामी विवेकानंद जी इस युग के ऐसे सच्चे भारतीय एवं दार्शनिक है, जिन्होंने अपने विचारों से केवल भारतीयों को ही नहीं अपितु पूरे विश्व को प्रभावित किया है। विवेकानन्द जी ने हमारे देश की आध्यात्मिक श्रेष्ठता और पाश्चात्य देशों की भौतिक श्रेष्ठता से परिचित कराया। उन्होंने मानव जीवन की विभिन्न समस्याओं पर गहन चिंतन किया। उनके चिंतन का क्षेत्र धर्म, दर्शन, सामाणिक और राजनीतिक व्यवस्था, शिक्षा प्रणाली राष्ट्र का सम्मान और कई अन्य क्षेत्र थे। विभिन्न समस्याओं पर उनके विचारों ने राष्ट्र को एक कई दिशा दी । स्वामी जी का मानना था कि " शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।" वह शिक्षा के माध्यम से व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में विश्वास रखते थे। इन्होंने उद्घोष किया कि प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित करो और शिक्षा के द्वारा मानव में ज्ञान और कुशलता को विक सित करो, जिससे वे अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कुशलतापूर्वक कार्य कार्य करने में सक्षम है। स्वामी विवेकानन्द जी ने जनसेवा एवं जन शिक्षा की व्यवस्था की, समाज से वर्गभेद, विशेषाधिकार, अंधविश्वास को मिटाने में पूर्ण योगदान दिया कुल मिलाकर स्वामी जी के शैक्षिक विचार भारतीय धर्म एवं दर्शन पर आधारित है और भारतीय दर्शन आयुर्वेदिक के बारे में के अनुकूल है। स्वामी विवेकानन्द जी के बारे में पं. जवाहर लाल नेहरू के विचार " भारत के अतीत में सरल आस्था रखते हुए और भारत की विरासत पर गर्व करते हुए श्री स्वामी जी का जीवन की समस्यायों के प्रति दृष्टिकोण आधुनिक था भीर में भारत के अतीत तथा वर्तमान के बीच एक बड़े संयोजक थे।"

मूल शब्द– स्वामी विवेकानंद, शिक्षा, दर्शन

भूमिका :

विश्वप्रसिद्ध दार्शनिक कौर विश्रुत शिक्षाशास्वी स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी 1863 को मकर संक्रान्ति के दिन बंगाल के कलकत्ता के सिमुलिया पल्वी में प्रसिद्ध वकील विश्वनाथ दत्त के यहाँ हुआ था। स्वामी विवेकानन्द अपने चिंतन और व्यवहार में वे आदी के प्रतिमान थे। उनका चिंतन एवं अध्ययन इतना गूढ–गम्भीर मौलिक एवं गवेषापूर्ण रहा जिसेक कारण वे विश्व में एक अप्रतिमय दार्शनिक के रूप में विख्यात हुए।

स्वामी जी का जीवन दर्शन भारतीय दर्शन के वेदात शाखा से अभिप्रेरित है। उन्होंने आपने जीवन में किसी प्रकार की संकुचित भावना को स्थान नहीं दिया। वे मानव मात्र को ईश्वर की उपस्थिति मानते थे। स्थानी जी–" जब हम दर्शन का अध्ययन करते हैं तब हमें यह ज्ञात होता है कि सपूर्ण विश्व एक है आध्यात्मिक, भौतिक, मानसिक तथा

प्राण जगत में यह भिन्न–भिन्न नहीं है। समस्त विश्व यहां से वहां तक एक है, है बात इतनी ही है कि अलग–अलग दृ ष्टिकोण से देखे जाने के कारण वह विभिन्न प्रतीत होता है।"

वेदांत दर्शन के आलोक में विवेकावन्द ने या बात पर दिया है कि आत्मा शाश्वत और सर्वव्यापी है। सम्पूर्ण विश्व में एक चेतन सत्ता व्याप्त है। स्वामी जी ने कहा कि –

- विश्व परमात्मा का व्यापक रूप है।
- ईश्वर की परिभाषा करना चर्चित चर्वण है, क्योंकि एकमात्र परम अस्तित्व, जिसे हम जानते हैं, वहीं है।
- ईश्वर मनुष्य बना, मनुष्य फिर से ईश्वर बनेगा ।
- विश्व में केवल आत्मतत्व है, सब कुछ केवल उसकी अभिव्यक्तियां है।
- निर्भीकता, सत्यता और स्वतंत्रता में विश्वास था।
- जब तुम अपने आपको शरीर समझते हो, तब तुम विश्व से अलग हो, तब तुम अनंत अग्नि के इस स्फुलिंग हो जब तुम अपने आप को आत्मस्वरूप मानते हो, तभी तुम विश्व हो
- ज्ञान, भक्ति, योग और कर्म –ये चार मार्ग मुक्ति की ओर ले जाने वाले हैं। हर एक को उस मार्ग का अनुसरण करना चाहिए जिसके लिए वह योग्य है, लेकिन इस युग में कर्म योग पर विशेष बोल देना चाहिए ।

स्वामी जी का संदेश था– जीवन संग्राम में वीर बनो कहो सबसे कहो, कि तुम निर्भय हो। भय का त्याग करो, क्योंकि भय मृत्यु है, भय पाप है, भय अधोलोक" भय अधर्मिता है, भय का जीवन में कोई स्थान नहीं।

स्वामी विवेकानन्द के नस–नस से भारतीय तथा आध्यामिकता कूट–कूटकर भर हुई थी। अतः उनके शिक्षा दर्शन का आधार भी भारतीय वेदात तथा उपनिषद ही रहे स्वामी विवेकानन्द" शिक्षा मनुष्य में पहले से उपस्थित पूर्णता का प्रदर्शन है। सभी प्रकार का ज्ञान चाहे वह आध्यात्मिक हो या धार्मिक सभी मनुष्य की बुद्धि का परिणाम है मनुष्य अपने ज्ञान को प्रदर्शित करता है, उस ज्ञान का पहले अपने आप में खोजने का प्रयत्न करता है जो उसके अंदर पहले से विद्यमान है, हम जिसे शान्ति, प्रकृति रहस्य अथवा बल कहते है। वह हममें ही है जिस तरह चिंगारी में आग विद्यमान होती है। उसी प्रकार ज्ञान हमारे मस्तिष्क में विद्यमान रहता है बस उसे हवा देने अर्थात सुझाव एवं शिक्षा देने की आवश्यकता है।

स्वामी विवेकानंद– " शिक्षा की व्याख्या शक्ति के विकास के रूप में की जा सकती है शिक्षा मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।''

स्वामी विवेकानंद जी कहते हैं कि "ज्ञान मनुष्य में विद्यमान रहता है कोई भी ज्ञान बाहर से नहीं आता। हम जो कुछ भी कहते हैं व्यक्ति उसे अच्छी तरह से जानता है। बस आवश्यकता इस बात की है कि उसे उचित मनोवैज्ञानिक भाषा के द्वारा खोज निकाला जाए एक व्यक्ति के शिक्षित होने का तात्पर्य यही है कि वह हमारी आत्मा पर पड़ा हुआ पर्दा कैसे हटाए और स्वयं को कैसे खोजें।

शिक्षा के अर्थ की व्याख्या स्वामी जी ने विशाल संदर्भ में की है– स्वामी जी शिक्षा के द्वारा मनुष्य को लौकिक एवं अलौकिक दोनों जीवन के लिए प्रशिक्षित करना चाहते थे स्वामी जी का मानना था कि जब तक हम भौतिक दृष्टि से संपन्न एवं सुखी नहीं होंगे तब तक ज्ञान, कर्म, भक्ति और योग में यह सब मात्र कल्पना की वस्तु है स्वामी विवेकानंद जी ने लौकिक दृष्टिकोण का नारा दिया "हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिसके द्वारा चरित्र का गठन हो मन का बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य स्वालंबी बने इस प्रकार की शिक्षा को विवेकानंद जी मनुष्य के निर्माण की शिक्षा कहते थे।''

स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा का अर्थ मनुष्य में निहित शक्तियों का पूर्ण विकास है ना कि मात्र सूचनाओं का संग्रह उनके अनुसार यदि शिक्षा का अर्थ सूचनाओं से होता तो पुस्तकालय संसार के सर्वश्रेष्ठ सत्ता होते और विश्वकोष बन जाते।

शिक्षा का उद्देश्यः

स्वामी विवेकानंद जी ने बालकों के लिए शिक्षा का मुख्य उद्देश्य –"छात्रों में देश प्रेम की भावना का समावेश बताया है" स्वामी जी का कथन है – "यदि शिक्षा देश प्रेम की प्रेरणा नहीं देता है तो उसको राष्ट्रीय शिक्षा नहीं कहा जा सकता।"

स्वामी विवेकानंद की मनुष्य को लौकिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोणपूर्ण बनाने के लिए मनुष्य के स्वस्थ शरीर को आवश्यक समझते थे उनका मानना था कि हमें ऐसे बलिष्ठ लोगों की आवश्यकता है जिनकी पेशियां लोहे के समान दृढ़ हो और इस स्नाऊ फौलाद की तरह मजबूत।

स्वामी जी ने भारत के पिछड़ेपन को दूर करने के लिए छात्रों का मानसिक एवं बौद्धिक विकास करने के लिए उन्हें आधुनिक ज्ञान विज्ञान से परिचित करा कर उनके अच्छे ज्ञान एवं कौशल का विकास करें जिससे उनमें समाज में पूर्ण आत्मविश्वास के साथ खड़े होना का सामर्थ प्रदान हो

स्वामी जी शिक्षा द्वारा मानव में समाज सेवा की भावना का भी विकास करना चाहते थे। उनका मानना था पढे–लिखे और सम्पन्न लोगों दीन–हीनों की सेवा करें, उन्हें ऊँचा उठाने के लिए प्रयत्न करें। समाज सेवा से इसका तात्पर्य दया या दान से नहीं था, समाज सेवा से इनका तात्पर्य दीना–हीनों के उत्थान में सहयोग करते से था। समाज सेवा को विवेकानन्द जी आध्यामिक दृष्टि से भी विशेष महत्व देते थे ये मनुष्य को ईश्वर का मन्दिर मानते थे और उसकी सेवा को ईश्वर की सेवा मानते थे।

विवेकानन्द जी ने शिक्षा द्वारा मनुष्य के चारित्रिक विकास पर भी बल दिया। नैतिकता से इसका तात्पर्म सामाजिक नैतिकता कौर धार्मिक नैतिकता दोनों से था। स्वामी जी का विश्वास था कि किसी देश की महानता केवल उसके संसदीय कार्यों से नहीं होती अपितु उसके नागरिक की महानता से होती है।

विवेकानंद जी ने व्यावसायिक विकास को भी शिक्षा का उद्देश्य माना और उद्घोष किया कि कोरे आध्यात्मिक सिद्धांतों से जीवन नहीं चल सकता। हमें कर्म के प्रत्येक क्षेत्र में आगे आना चाहिए उन्होंने शिक्षा द्वारा मनुष्यों को उत्पादन एंव उद्योग कार्यों तथा अन्य व्यवसायों में प्रशिक्षित करने पर बल दिया।

स्वामी विवेकानन्द जी का विचार था कि ऐसी शिक्षा दी जाये जिससे ज्ञान का स्वाभाविक प्रसार हो । युवक नये ज्ञान की खोज में पूर्ण मनोयोग से लग जाए तथा मानव जीवन का वास्तविक कार्य एवं उद्देशल समझ सके।

युवकों में राजनीति, प्रशासन और व्यवसाय तथा उद्योग एवं वाणिज्य के क्षेत्र में नेतृत्व जनता का विकास करना विश्वविद्यालय का कर्तव्य है। उन्हें हर प्रकार की उच्च शिक्षा साहित्यिक, वैज्ञानिक, प्राविधिक एवं व्यवसायिक की बढ़ती मांग को पूरा करता है, इस प्रकार शिक्षा द्वारा विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान के प्रयोग द्वारा कम से कम समय में राष्ट्र को इस मोग्य बनाना है कि भारत को को अभाव, रोग, अशिक्षा और अज्ञानता से पूरी तरह मुक्ति मिल का सके। अतः हमारी शिक्षा का उद्देश्य भौतिक अभावों की पूर्ति और आर्थिक समृद्धि हेतु व्यावसायिक तथा तकनीकी शिक्षा प्रदान करना होगा।

शिक्षा की पाठ्यचर्याः

पाठ्यचर्या तो उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन होती है, उदार शिक्षा विद्यार्थी में स्वतंत विचार तथा समालोचनात्मक व रचनात्मक शक्ति का विकास करती है। साथ ही व्यवसायिक तथा प्राविधिक व तकनीकी शिक्षा से विद्यार्थियों में कौशल एवं अभिरुचि का विकास होता है।

शिक्षा की पाठ्यचर्या के सन्दर्भ में स्वामी जी का दृष्टिकोण बहुत ध्यापक था। पाठ्यचर्या में वे सब विषम एवं क्रियाएं सम्मिलित की जो मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक है। मनुष्य समाज अथवा राष्ट्र के भौतिक विकास के लिए पाश्चात्य विज्ञान एवं तकनीकी को मुख्य स्थान दिया और उन्हें समझने के लिए अंग्रेजी भाषा को स्थान दिया।

- मनुष्य के भौतिक विकास की दृष्टि से पाठ्यचर्या में मातृभाषा, प्रदेशिक भाषा संकृत और अंग्रेजी भाषा को स्थान दिया।
- मानसिक एवं बौद्धिक विकास हेतु भाषा, कला, संगीत इतिहास भूगोल, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र, गणित ,विज्ञान विषयों को स्थान दिया।
- आध्यात्मिक विकास की वृष्टि से साहित्य, धर्म, दर्शन, और नीति शास्त्र को तथा भजन, कीर्तन, सत्संग एवं ध्यान की क्रियायो को स्थान दिया।स्वामी जी ने देश में उच्च शिक्षा की व्यवस्था करने पर भी बल दिया और उसके द्वारा अपने ही देश में इंजीनियरों, डाक्टरों, वकीलों प्रशासको आदि की शिक्षा व्यवस्था करने पर बोल दिया उच्च शिक्ष की पाठ्यचर्या में देश विदेश के उच्चतम ज्ञान एवं कौशल और विज्ञान एवं तकनीकी को स्थान देने पर बल दिया।

शिक्षण विधिः

स्वामी जी ने भौतिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रत्यक्ष, अनुकरण, व्याख्यान, निर्देशन, विचार–विमर्श और प्रयोग विधियों का समर्थन किया है। स्वाध्याय, मननः ध्यान और योग की विधियों को आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए। स्वामीजी का अनुभव था कि भौतिक और आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति की सर्वतिम विधि–योग विधि (एकाग्रता) है।

उच्च शिक्षा में व्याखान विधि ही शिक्षण की सामान्य विधि है। किन्तु छात्र इस शिक्षण विधि से पूरा लाभ इस कारण नहीं उठा पाते क्योंकि वह व्याख्यान से पहले व्यक्तिगत तैयारी या व्याख्यान के बाद पुस्तकालय से नियमित स्वाध्याय नहीं करता।

स्वामी जी प्रायोगिक विषयों– विज्ञान एवं तकनीकी और क्रियायो के शिक्षण एवं प्रशिक्षण के लिए इस विधि के प्रयोग का समर्थन करते हैं।

उपयुक्त शिक्षण विधियों के साथ–साथ विभिन्न विषयों के शिक्षण में निरीक्षण विधि, परीक्षण विधि और प्रयोग विधि तथा पर्यटन एवं तर्क विधियों का प्रयोग आवश्यकतापुसार करना चाहिए।

अनुशासनः

अनुशासन के संबंध में स्वामी विवेकानंद जी के विचार प्रकृतिवाद से मिलते जुलते हैं स्वामी जी के अनुसार अनुशासन का अर्थ अपने व्यवहार में आत्मा द्वारा निर्दिष्ट होना। स्वामी जी का कहना था कि बालक को स्वनुशासन सीखना चाहिए। उन्हें किसी प्रकार का शारीरिक दंड नहीं देना चाहिए, बल्कि उन्हें सीखने के लिए पर्याप्त स्वतंत्रता दी जानी चाहिए तथा सहानुभूतिपूर्ण सीखने के लिए उत्साहित करना चाहिए छात्रों में अनुशासन की भावना को जगाने हेतु विद्यालयों में रचनात्मक वातावरण सूचित करना चाहिए छात्रों को आत्म सम्मान एवं आत्मविश्वास के विकास का अवसर

देना होगा इसके लिए पर्याप्त मात्रा में मनोरंजन के अवसर खेलकूद और व्यायाम तथा सामाजिक क्रियाकलापों एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने की उचित व्यवस्था होनी चाहिए इससे उनकी ऊर्जा को निसंदेह रचनात्मक दिशा मिलेगी

शिक्षकः

स्वामी जी को सर्व शिक्षा में विश्वास था वह कहते थे कि हम में से प्रत्येक व्यक्ति अपना स्वयं शिक्षक है। बाहरी शिक्षक तो केवल ऐसे सुझाव प्रस्तुत करता है जिसे आंतरिक शिक्षक को अपने कार्य को करने और समझने के लिए चेतना मिलती है।शिक्षक के स्थान के विषय में विवेकानंद जी का विचार है कि– ''शिक्षक एक दार्शनिक मित्र तथा पद प्रदर्शन है जो बालक को अपने ढंग से अग्रसर होने के लिए सहायता प्रदान करता है।''

उपसंहारः

स्वामी विवेकानंद के शिक्षा दर्शन में वस्तुतः हमें समन्वयवाद के दर्शन होते हैं वह चिंतन और क्रिया में विरोध नहीं मानते हैं दूसरे शब्दों में उन्होंने ज्ञान कर्म और भक्ति के समन्वय पर बल दिया पंडित जवाहरलाल नेहरू उनके बारे में कहा है कि ''भारत के अतीत में अधिक आस्था रखते हुए और भारत की विरासत पर गर्व करते हुए विवेकानंद जी का जीवन की समस्याओं के प्रति आधुनिक दृष्टिकोण था और वह भारत के अतीत तथा वर्तमान के बीच एक प्रकार के संयोजक थे।''

संदर्भ सूची

[1]. लाल डॉ रमन बिहारी, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार और लाल बुक डिपो मेरठ पृष्ठ 301
[2]. द्विवेदी डॉ रोली, ज्ञान पाठ्यक्रम अग्रवाल प्रकाशन आगरा पृष्ठ 223
[3]. सक्सेना एन आर स्वरूप, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत और लाल बुक डिपो मेरठ पृष्ठ 368
[4]. चौरसिया भीमसेन, शिक्षा शास्त्र एक अभूतपूर्व संकलन, प्रबलिका पब्लिकेशन इलाहाबाद पृष्ठ 75
[5]. मिश्रा संध्या, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, ग्रन्थम प्रकाशन कानपुर पृष्ठ 195
[6]. मदन पूनम, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा पृष्ठ 225

Cite this Article

डॉ निशा द्विवेदी, "स्वामी विवेकानंद का शिक्षा दर्शन", *International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST), ISSN: 2584-0231, Volume 2, Issue 6, pp. 18-22, June 2024.*

Journal URL: https://ijmrast.com/

DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i6.62

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.